Summary of the paper presented in the National Seminar on 'DALIT LITERATURE IN HINDI – PRESENT & FUTURE' organized by the Department of Hindi, Govt. College,Chittur, Palakkad on 15th & 16th Dec-2016.

दलित काव्य विमर्श

(ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं के विशेष संदर्भ में)

डॉ.जयरामन.पी.एन.

दलित साहीत्य को लेकर आजकल काफ़ी चर्चा हो रही है। अंग्रेज़ी उपनिवेशीय तथा नव उपनिवेशीय सांस्कृतिक माहौल के प्रभाव के कारण शायद हो सकता है भारतीयों की यही आदत रही है कि वे हरेक साहित्यिक विधा की नींव की खोज पाश्चात्य साहित्य में करते हैं। इसी कारण से दलित साहित्य को अमेरिकी 'ब्लैक लिटरेचर' का भारतीय रूप समझते हैं। किंतु दलित रचनाकार इसे स्वीकारते नहीं हैं। हिंदी के बहुचर्चित दलित लेखक जयप्रकाश कर्दम का मत है – " 'ब्लैक लिटरेचर' अमेरिका का है, जिसका भारतीय समाज के ब्राह्मणवाद से कोई संबंध नहीं है जबकी दलित साहित्य का सीधा अटैक ही ब्राह्मणवाद पर है।" (दलित साहित्य : सामाजिक बदलाव की पटकथा, पृ. 15)। भारतीय दलित साहित्य भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवेश की उपज है। इस पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव बहुत कम है।

दलित साहित्य दलितों की पीडा, उत्पीडन, शोषण इन सबके विरुद्ध उनके आक्रोश तथा परिवर्तन के संकल्प का साहित्य है जो जातिविहीन समाज का सपना पालता है। यह बहिष्कृत समाज को मुख्य समाज के समकक्ष लाने का प्रयास करता है। इसमें सहानुभूति की नहीं, सहजीवन की कामना है। दलितों द्वारा लिखे जाने पर ही उसमें अनुभूति की सच्चाई आ जाएगी। इसलिए दलितों द्वारा लिखित साहित्य को ही आजकल दलित साहित्य की कोटि में गिना जाता है।

दलित साहित्य बाबासाहब अंबेडकर की विचारधारा को अपना मूल स्रेत मानता है। अंबेडकर की विचारधारा के केंद्र में मनुष्य है। उन्होंने विकृत रूढियों, परंपराओं, देवी-देवताओं, भाग्य, पूर्वजन्म का फल, अंधविश्वास इन सहको नकारा है। उन्होंने दलितों को विचारवान और तर्कशील बनाने का प्रयास किया। उनका मत था कि भारत में रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार होना चाहिए। किंतु उन्होंने महसूस किया कि हिंदू धर्म में जो जातीय भेदभाव है, वह समानता की प्राप्ति में बाधक है। इसलिए उन्होंने हिंदू धर्म छोडकर बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। उनका मत था कि दलितों को समानता हासिल करने के लिए सत्ता की भी ज़रूरत है।

दलित साहित्य का मूल्यांकन परंपरागत काव्य सिद्धांतों से संभव नहीं होगा। यह दलितों के खुरदरे यथार्थों की अभिव्यक्ति है, कल्पना-प्रसूत नहीं। इसलिए दलित साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए एक अलग सौंदर्यशास्त्र की ज़रूरत होती है।

जो व्यवस्था समाज के खिलाफ़ है, काव्य उसका विरोध करता है। इस दृष्टि से दलित कविता भी अपना दायित्व पूर्ण रूप से निभा रही है। हिंदी दलित कविता समाज से उपेक्षित, हाशियेकृत, शोषित, पीडित, पददलित जनसमुदाय के दुख, दर्द, विद्रोह, आक्रोश आदि प्रकट करके उन्हें मुख्य-धारा में मिलाकर समाज में समता की स्थापना का प्रयास करती है। समाज में मानवीयता और समानता की प्रतिष्ठा के खिलाफ़ जो तत्व हैं, चाहे वह धर्म हो, जाति हो, ईश्वर हो, रूढियाँ हो, अंधविश्वास और अनाचार हो, शोषण हो, इन सहको वह नकारती है। वह हाशियेकृतों की सहस्राब्दियों की पीडा और यातना को समाप्त करना चाहती है, मानव-मानव के बीच के बाधक तत्व का अंत करना चाहती है। इसलिए आक्रोश और विद्रोह को साथ लेकर चलती है। यही दलित कविता का दर्शन है।

ओंमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में गूँज उठनेवाले मुख्य स्वर निम्न प्रकार के हैं :-

1. भोगे हुए यथार्थ का चित्रण

वाल्मीकि जी की कुछ कविताएँ भोगे हुए दर्द की दस्तावेज़ के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। इस दर्द के पीछे हज़ारों साल के शोषण और उपेक्षा का इतिहास भी खुल जाता है। 'सदियों का संताप' में वे लिखते हैं –

"मैं शोषित, पीडित हूँ

अंत नहीं मेरी पीडा का"

(सदियों का संताप, पृ. 25)

वरेण्य वर्ग 'वसुधैव कुटुंबकम' की बात करते हैं और इसकी ओट में दलितों को धोखा देते हैं। दलित दिन रात समाज की भलाई के लिए कर्म-निरत रहते हैं, किंतु उन्हें समाज से दुत्कार, फटकार, गालियाँ आदि मिलती रहती हैं। इसलिए 'वसुधैव कुटुंबकम' का शब्द उन्हें खोखला लगता है।

"सुनता रहा

हर रोज़ घृणा और द्वेष के मंत्र

कितना खोखला लगता है शास्त्रीय भाषा का

यह शब्द!

वसुधैव कुटुंबकम!"

(शब्द झूठ नहीं बोलते, पृ.25)

वाल्मीकि जी की अनेक कविताएँ भोगे हुए खुरदरे यथार्थ का चित्रण करनेवाली हैं।

2. जातिवाद का विरोध

जातिवाद भारतीय समाज का सबसे बडा अभिशाप है। दलितों की दुस्थिति का यही प्रमुख कारण है। इसकी आड में सवर्ण शोषण के षडयंत्र रचते हैं। वाल्मीकि जी ने अपनी कविताओं में जातिवाद, ब्राह्मणवाद आदि का सख्त विरोध किया है और जीतिविहीन समाज की स्थापना की कामना की है। ज्वालामुखी कविता में वे कहते हैं कि जाति-व्यवस्था के बंधन में समाज की प्रगति अवरुद्ध है, इतिहास गहन अंधकार में डूब गया है।

"बाहें फडकती हैं
जिह्वा मचलती है
प्रगति अवरुद्ध है
जाति-व्यवस्था के बंधन में।
अतीत, शोषित, प्रताडित
इतिहास गहन अंधकार में डूब गया है।"

(सदियों का संताप, पृ. 17)

उनकी अनेक कविताओं में जातिव्यवस्था के खिलाफ ऐसे विद्रोही शब्द गूँज उठते हैं।

3. धर्म और ईश्वर का निषेध

दलित साहित्य धार्मिक और सांस्कृतिक रूढियाँ, ईश्वर आदि का निषेध करता है, क्योंकि इनकी आड में उच्चवर्ग दलितों को अंधविश्वास के जाल में फ़ँसाकर शोषण करते हैं। ये सब ब्राह्मणवादी मानसिकता की उपज हैं जो मानवीयता के खिलाफ़ है। दलितों का ईश्वर पर भरोसा इसलिए नष्ट हो गया कि वह सदा सवर्णों के साथ रहता है, उसकी भलाई करता है। दलितों को वह दूर भगाता है, उनकी समस्याएँ सुनने के लिए वह तैयार नहीं होता। 'लेखा-जोखा' कविता में वाल्मीकि जी लिखते हैं –

"शिवालय के दरवाज़े से दूर
खडे होकर माँगी मन्नतें
सही दुत्कार बामन की
यह सोचकर
कभी तो खुलेगा तदवाज़ा
अपने लिए भी

भीतर सोया देवता

जागेगा किसी रोज़

पी जाएगा समूचा विष

बाहर आकर

न दरवाज़ा ही खुला कभी

न देवता ही अपना हो सका।"

(अब और नहीं, पृ.9-10)

वाल्मीकि जी का मत है कि सारे धर्म सूत्र दलितों के खिलाफ़ रची गयी साजिशें हैं, जिनका वे शब्दकोश से बाहर कर देना चाहते हैं –

"बाहर कर देंगे

शब्दकोश से

धर्म सूत्रों की साजिशें

महान ग्रंथों में रची घृणाएँ।"

(अब और नहीं, पृ. 68)

इस तरह जाति, धर्म, ईश्वर आदि की आड में समाज में दलितें का जो शोषण हो रहा है, वील्मीकि जी की कविताएँ इससे हमें अवगत कराती हैं।

4.अन्याय और अत्याचार के खिलाफ़ आक्रोश

आज का दलित लेखक समझता है कि समाज में उनका अनेक प्रकार से शोषण हो रहा है। कभी धर्म या ईश्वर की आड में, कभी जाति के नाम पर, कभी संस्कृति के वास्ते उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। वाल्मीकि जी बताते हैं कि उनके पूर्वज और माँ-बाप धर्मभीरू थे, इसलिए यह सब अपना नियति समझते थे। इसका प्रमुख कारण यह था कि वे अनपढ थे, सोच-विचार करने की क्षमता उनमें नहीं थी। किंतु आज दलित समझता है कि चुप रहना कितना महँगा पडा है। दलितों के जीवन में जो अंधेरा छा गया है, जो भयावह त्रासदी है, इससे मुक्त होने के लिए तमाम अवरोधों के तोडकर आगे आने का आह्वान कवि दे रहा है –

"अंधेरों की भयावह त्रासदी से

मुक्त होना है अभी

और अभी

तोडकर तमाम अवरोधों को"

(शब्द झूठ नहीं बोलते, पृ. 49)

'सत्य की परिभाषा' शीर्षक कविता में कवि आक्रोश करता है कि सवर्णों ने संस्कृति को तहखानें में कैद कर रखा है, क्या यह उनकी रखैल है ? –

"कैद कर रखा है तुमने तहखानों में

संस्कृति को

मैं पूछता हँू

संस्कृति क्या तुम्हारी रखैल है?"

(बस्स! बहुत हो चुका, पृ. 102)

कवि समझता है –

"प्रगति अवरुद्ध

जाति व्यवस्था के बंधन में।

अतीत, शोषित, प्रताडित

इतिहास गहन अंधकार में डूब गया है।"

(सदियों का संताप, पृ. 17)

अपने समाज से कवि का आह्वान है कि चुप्पी तोडकर लडने से ही हमें अपने अधिकार की प्राप्ति होगी, बर्बरतापूर्ण ज़िंदगी से मुक्ति मिलेगी।

5. सत्ता और राजनिति पर व्यंग्य

दलित लोग समझते हैं कि सत्ताधारी भी उनकी समस्याएँ समझने का या दूर करने का प्रयास नहीं करते। आज़ादी के बाद भारत में कितने चुनाव हो गये, कितनी सरकारें सत्ता पर आ गयीं, फिर भी दलितों की समस्याएँ दूर नहीं हुईं, उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, कोई प्रगति नहीं हुई। इसलिए लोकतंत्र पर भी कवि का विश्वास नष्ट हो गया है। वे लिखते हैं –

" साल-दरसाल गुजरते हैं

दीवारों पर चिपके चुनावी पोस्टर

मुँह चिढाते हैं।

जब तक रामेसरी के हाथ में

खडांग-खांग घिसटती लौह गाडी है

मेरे देश का लोकतंत्र

एक गाली है।"

(सदियों का संताप, पृ. 33)

आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए वालमीकि जी लिखते हैं कि लोकतंत्र का नया भाष्य सुनाई पड रहा है। आज टैक्स चोर, जमाखोर, कालाबाज़ारि करनेवाला, धोखेबाज़ आदि खुद को ईमानदार घोषित करके चुनाव में लडते हैं और सत्ता हासिल करते हैं।

"लोकतंत्र का नया भाष्य

सुनाई पड रहा है

मेरे इर्द-गिर्द

हर जगह टंगा है एक ही नारा

सिर पर टोपी लौट आयी है

टैक्स चोरों, जमाखोरों

काला बाज़ारी करनावाले

धोखेबाज़ों ने दिखाई है चुस्ती

टाँग कर अपने सीने पर नारा

धोषित कर दिया है खुद को ईमानदार।"

(शब्द झूठ नहीं बोलते, पृ. 113)

इस तरह वाल्मीकि जी की कुछ कविताएँ राजनीतिक खोखलेपन का पर्दाफाश करती हैं, लोकतंत्र की आड में होनेवाले अन्याय, अत्याचार आदि के खिलाफ़ व्यंग्य बाण कसती हैं। राजनीतिक अव्यवस्था के प्रति कवि के आक्रेश के पीछे आदर्श राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना की कामना है।

संक्षेप में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से दलित जीवन कि सही प्रतिलिपि प्रस्तुत की है। उनमें दलितों के भोगे हुए यथार्थ का चित्रण है, जाति, धर्म, संस्कृति और ईश्वर की आड में सहस्राब्दियों से रचनेवाली साजिशों की पोल खुलती है, दलितों के साथ होनेवाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आक्रोश है तथा जातिविहीन, समता-युक्त समाज की स्थापना की कामना है। बोलचाल की सरल, सहज, स्वाभाविक भाषा में, चिरपरिचित प्रतीकों और बिंबों के सहारे तथा पौराणिक मिथकों के नये अर्थ और संदर्भ में प्रयाग करके उन्होंने अपने भावों और विचारों को अधिक संप्रेषणीय बनाया है। वास्तव में वालमीकि जी ने अपनी कविताओं के ज़रिए सामाजिक शोषण के विरुद्ध खडे होकर दलित अस्मिती की खोज की है, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की है।

डॉ.जयरामन.पी.एन.,
असिस्टेंड प्रोफ़ेसर (हिंदी),
सरकारी विक्टोरिया कॉलेज,
पालक्काड।